तृतीय अध्याय

विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में आदिम जनजीवन की सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियाँ

3.1 सामाजिक स्थिति

- 3.1.1 अंधविश्वास
- 3.1.2 आदिम नारी की स्थिति
- 3.1.3 अवैध यौन-संबंध
- 3.1.4 लोकगीत
- 3.1.5 पारिवारिक स्थिति
- 3.1.6 घोटुल
- 3.1.7 स्वच्छन्दी वृत्ति
- 3.1.8 विवाह संस्कार
- 3.1.9 शिक्षा संबंधी मान्यताएँ

3.2 आर्थिक स्थिति

समन्वित निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची

विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में आदिम जनजीवन की सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियाँ

भारतीय समाज की सामाजिक परिस्थितीयों का निर्माण करनेवाली उस समाज की सामाजिक वर्णव्यवस्था, जातिव्यवस्था, परिवार व्यवस्था, उस समाज के नारी की सामाजिक स्थिति शैक्षणिक स्थिती और राजनीतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यपर आधारित आर्थिक व्यवस्था रहती है। ये सभी संस्थाएँ भारतीय समाज जीवन का तथा आदिम समाज जीवन का आधार रही है। स्वातंत्र्योत्तर काल में भारत सरकार द्वारा वर्णव्यवस्था तथा जातिव्यवस्था से उत्पन्न सामाजिक विषमता का उन्मूलन करने का भरकस प्रयास किया जा रहा है। आदिमों में आज भी अज्ञान, अशिक्षा, अंधविश्वास के कारण जातियता, विषमता के दर्शन कम अधिक मात्रा में हो रहे हैं।

राजेंद्र अवस्थी जी ने विवेच्य कहानी संग्रह 'महुआ आम के जंगल' में आदिमों की सामाजिक स्थिति पर गहराई से सोचा है। आदिमों की सामाजिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत आदिमों का अंधविश्वास, उनकी जातिपंचायत, आदिम नारी की स्थिति, अवैध यौन-संबंध, उनकी शिक्षा संबंधी मान्यताएँ, उनके लोकगीत, उनकी पारिवारिक स्थिति, घोटुल संबंधी मान्यताएँ, उनकी स्वच्छन्दी वृत्ति, उनकी विवाह तथा रूढ़िवादी प्रणाली के खिलाफ विद्रोह आदि का चित्रण करके अवस्थी जी ने आदिमों की पृष्ठ सामाजिकता को प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपनी लेखणी के द्वारा आदिमों की जीवन प्रणाली को सशक्त रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में आदिम समाज जीवन का पूरा का लेखा-जोखा अवस्थी जी ने प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियाँ आदिम समाज की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति आदिमों में प्रचलित मान्यताएँ आदि का चित्रण करती है।

आज आदिम समाज की संस्कृति उनमें प्रविष्ट हो रहे शहरीकरण के

कारण संकट में है। धार्मिक और सांप्रदायिक संघर्षों की हवा वहाँ बहने लगी है। जातियता एवं वंशीय भेदाभेद भी वहाँ बढ़ने लगा है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के इस अध्याय में आदिमों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती पर विचार करके उनमें स्थित प्रवृत्तियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में आदिमों की सामाजिक स्थिति इस प्रकार है...

3.1 सामाजिक स्थिति :

सामाजिक स्थिति के अंतर्गत विवेच्य कहानी संग्रह में आदिमों में प्रचलित अंधविश्वास, आदिम नारी की स्थिति, उनमें अवैध यौन-संबंध, उनके लोकगीत, उनकी पारिवारिक स्थिति, उनकी स्वच्छन्दी वृत्ती, उनके विवाह संस्कार, उनकी शिक्षा संबंधी मान्यताएँ आदि को उजागर करना महत्वपूर्ण लगता है।

3.1.1 अंधविश्वास :

भारतीय समाज और धर्मव्यवस्था में कुछ विश्वास और श्रद्धा को जो मान्यता प्राप्त हो रही है उसे अंधविश्वास की कोटी में रखा जा सकता है। अज्ञान, अशिक्षा के कारण समूचा आदिम समाज अंधविश्वास के कटघरे में खड़ा है। आदिम लोगों में अंधविश्वास की मात्रा अधिक रहती है। अपने अराध्य देवी-देवताओं, अलौकिक शक्तियों को प्रसन्न करने के लिए सुअर, मुर्गी, बकरे की बलि देने की उनमें प्रथा है।

"अंधविश्वासों का उद्गम मानव मन का एक अभियान है इसका कारण है कि आदिमानवीय विकास स्थिति में अंधविश्वास एक ऐसी दशा की ओर संकेत करते हैं। जब मानव नामधारी प्राणी की मानसिक शक्ति प्रकृति तथा विश्व प्रति एक जिज्ञासा कौतुहल तथा भय की मिली-जुली मनोवृत्ति का परिचय देती है।"[1] अत: स्पष्ट है कि मानव जीवन के विकास में अंधविश्वासों का महत्त्व है यह केवल कल्पना की उड़ान नहीं है।

अवस्थी जी ने आदिमों की अंधविश्वासों संबंधी मान्यताओं को विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में सशक्त रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। अवस्थी जी ने 'महुआ आम के जंगल' कहानी में आदिमों के अंधविश्वास का चित्रण प्रस्तुत किया

है। विवेच्य कहानी में झिरिया और पंजाबी की प्रेम कहानी के माध्यम से आदिमों के अंधविश्वास का चित्रण किया है। झिरिया और पंजाबी के प्रेम संबंधों को गाँववालों द्वारा स्वीकार न करने पर झिरिया आत्महत्या कर लेती है और वह मृत्यु के उपरांत चुड़ैल बन जाती है। चुड़ैल बनने के बाद वह गाँव के लोगों को सताती रहती है। वह किसी भी रूप में प्रकट होती है। एक आदिम उसके संबंध में अंग्रेजी अफसर को बताते हुए कहता है - "मेरे घर का ही एक किस्सा है सरकार दो बरस पहले घर में लड़की हुई थी। मेरी बड़ी लड़की जब यह समाचार बताने बाहर आयी तो झोपड़ी में एक उल्लू बैठा दिखा उसे अशुभ समझकर उसने पत्थर मारा। उस पत्थर को उठाकर उल्लू भाग गया और उसके बाद से ही मेरी लड़की घुलने लगी।"[2] इस प्रकार आदिम बताता है कि उल्लू ने वह पत्थर पानी में भिगोकर किसी उँची टौरिया पर रख दिया जैसे जैसे पत्थर का पानी सूखता गया उसकी लड़की भी सूखती गई।

अवस्थी जी ने 'हिरौंदा' कहानी में आदिमों के अंधविश्वास का चित्रण किया है। कहानी की नायिका 'हिरौंदा' का पति 'नन्हें' किस प्रकार गाववालों की तकलीफों को झाड़-फूक एवं मंत्र-तंत्र द्वारा दूर करता है इसका चित्रण किया है। आदिम लोग अपनी बीमारियों को दूर करने के लिए अस्पताल न जाकर गाँव में ही किसी गुनिया, ओझा द्वारा अपनी बीमारी को दूर करने का प्रयास करते है। इसका चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है। इसका चित्रण विवेच्य कहानी में इस प्रकार हुआ है -"नदी किनारे एक मढ़िया है यही हर इतवार को उस पर देव सवार होता था। तब गाँव में सारे रोगी वहाँ जमा हो जाते थे। जिस के सिर पर वह हाथ फेरता आँख बदलते वह उठकर उचटने लगता था। गाँव की ठकुराइन का बच्चा पेट में ही चला बसा था समस्या कठिन थी पर नन्हें का जैसे ही हाथ लगा कि सब कुछ सुलझ गया। उसने ठकुराइन का पेट दो बार मला। लड़का पानी बनकर बाहर आ गया था। नन्हें की जयकार से ठाकूर की बखरी गूँज उठी थी।"[3]

यहाँ स्पष्ट होता है कि आदिमों के भोलेपन, अज्ञान, अशिक्षा के कारण उनमें प्रचलित कई अंधश्रद्धाएँ दिखाई देती है। इन्हीं कारणों से आदिम लोग आज भी विकास की प्रक्रिया में पिछड़े हुए कई अंधविश्वासों से जकड़े हुए दिखाई देते हैं।

3.1.2 आदिम नारी की स्थिति :

भारत की समाज व्यवस्था में नारी का स्थान महत्वपूर्ण है। वैदिक काल से आज तक नारी के रूप परिवर्तित होते आ रहे हैं। भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान स्नेह, ममता का प्रतीक है। वह मानव जीवन का रस है, अमृत है, और प्राण है। मगर भारतीय समाज व्यवस्था में कहीं-कहीं पर नारी को भोग्या के सिवा अधिक स्थान नहीं मिल रहा है। नारी जीवन इन स्थानों पर शोषित जीवन की कहानी रही है। नारी का जीवन संपूर्ण पतिव्रत्य में ही समाहित माना है। अर्थात पति सेवा यही उसका आदर्श मानकर संकुचित दायरे में आबद्ध करने का प्रयास हुआ है।

"अंधविश्वास तथा पुरुष की शारिरीक श्रेष्ठता ने आदिम महिलाओं के मार्ग में कोई अवरोध उत्पन्न नहीं किया है कि उसकी कमजोर स्थिति के बावजूद अच्छा व्यवहार किया न जा सके और वह पुरुषों के निर्णयों को प्रभावित करने में सक्षम न हो। यहाँ यह सत्य है कथित असभ्यतम जातियों में ही उसे अपने जीवन साथी के साथ व्यवहारिक समानता प्राप्त होती है।"[4] इन्हीं विविध आयामों पर प्रकाश डालते हुए आदिम जनजीवन में नारी की स्थिति को कहानियों में तलाशने का प्रयास किया है।

विवेच्य कहानी संग्रह की 'उसरखेत' कहानी में अवस्थी जी ने आदिम नारी की स्थिति को दर्शाया है। आदिम समाज में नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय है। उसे दासी बनकर जीवन व्यथित करना पडता है। 'उसरखेत' कहानी में नारी की पराधीनता और पुरुष की स्वाधीनता को स्पष्ट करते हुए अवस्थी जी ने लिखा है- "आदमी तो जंगल जैसा आजाद है। औरत उसका कर ही क्या सकती है।"[5] 'उसरखेत' कहानी नारी की इसी स्थिति को दर्शाती है। आदिम समाज में पुरुष अनेक स्त्रियों को रख सकता है परंतु नारी को एक ही पुरुष के साथ रहना पड़ता है। संतान न होने के कारण पुरुष

दूसरी पत्नी लाता है तो कभी सब कुछ होने के बावजूद वह दूसरी पत्नी लाता है। जो स्त्री माँ नहीं बन पाती उसे हर वक्त लांछित होना पड़ता है। 'उसरखेत' कहानी नारी की इसी संवेदना को स्पष्ट करती हैं। कहानी का नायक पिन्ना अपनी पत्नी मुंदरी से कहता है- "छः माह की मुहलत देता हूँ। माँ बनने के लच्छन न दिखे तो सौत ले आऊँगा तुझे उसकी दासी बनकर रहना होगा।"[6]

'तीर का तीनका' कहानी में अवस्थी जी ने आदिम नारी स्थिति की संवेदना को स्पष्ट किया है। कहानी की नायिका सुगरिन है। उसकी शादी शिकालगीर से तय हुई है। यह विवाह सुगरीन के पिता और शिकालगीर के पिता दोनों की मान्यता है। सुगरीन के पिता ने शिकालगीर के पिता से जो कर्जा लिया था। वह चुका नहीं पाये थे। इसलिए वे सुगरीन का ब्याह शिकालगीर के साथ करने के लिए राजी है। सुगरीन घोटुल के सदस्य अमलू से प्यार करती है पर आदिमों के नियमानुसार शादी नहीं कर सकती क्यों कि शिकालगीर के पिता ने उसके पिता की बहुत मदद कि थी 'घोटुल' के नियमानुसार सुगरीन की शादी शिकालगीर से होती है। घोटुल में गीत गा कर उसकी बिदाई होती है।

सुगरीन की बेटी की भी वही हालत है। वह घोटुल जाने लगती है। वह घोटुल के सदस्य जकरी से प्रेम करने लगती है लेकिन सुगरीन बुधिया को प्रेम करने से रोकती है क्योंकि वह नहीं चाहती कि उसने जो दर्द सहा है वह बुधिया भी सहे। वह बुधिया से कहती है - "हमारी कोई बिसात हो तो भी ठिक। हम औरत है न नदी के तीर का तीनका। टोंगी के नीचे की चींटी। सम्हलना हमारा काम है। न सम्हलें तो मौत खड़ी है। मरे तो चुड़ैल बनें। जनम लिया मुसिबत जिओ तो खुद अपना खुन पिओ। मरो तो दूसरों का खून चूसो। हमारे भाग में खून के साथ खेलना ही बदा है बुधिया।"[7] यहाँ स्पष्ट होता है कि सुगरीन प्रतीकात्मक शैली में नारी की स्थिति को स्पष्ट करती है।

पुरुष प्रदान संस्कृति में आदिम नारी को मन चाहा वर चुनने की इजाजत नहीं मिलती है। कभी पिताजी तो कभी माताजी के कारण उसे विवाह पूर्व प्रेमी से विवाह करने के लिए रोका जाता है।

3.1.3 अवैध यौन-संबंध :

भारतीय जनजातीय समाज व्यवस्था में यौन-संबंधों की स्थापना के लिए विवाह संस्था के अतिरिक्त दूसरे कई मार्ग भी तलाशे जाते हैं। कई जनजातियों में महिलाओं को वेश्या बनाकर धन कमाया जाता है तो कई जनजातियों में युवक युवतियाँ स्वच्छन्दतापूर्वक यौन-संबंध स्थापित करते हैं। कुछ जनजातियों में नारी एक से अधिक पुरुषों का साथ देती है या पुरुषोंद्वारा नारी से अनुचित संबंधों की माँग भी की जाती है। स्वर्णलता के मतानुसार - "यौन संबंधों के लिए आदिम जातियों में पाये जानेवाले ऐसे रीति-रिवाज है जिनके कारण यौन स्वच्छन्दता का संदेह होता है। उदा- उत्सवों पर स्त्रीयों का आदान-प्रदान करना अतिथि सत्कार हेतु पत्नियों को भेजना आदि।"[8]

आदिम जनजातियों में विवाहपूर्व और विवाहबाहय अवैध यौन संबंध रहे है। इसमें धर्म जाती उम्र पर विचार नहीं होता परिणामत: नैतिक-अनैतिकता का प्रश्न यहाँ खड़ा हो रहा है। चमनलाल गुप्ता के मतानुसार - "विवाहपोरांत प्रेमसंबंधों को स्वीकृती नहीं दी गयी है। इसे अवैध यौन संबंध माना गया है।"[9]

विवेच्य कहानी संग्रह में आदिमों में प्रचलित अवैध यौन-संबंधों का चित्रण अवस्थी जी ने किया है। विवेच्य कहानी संग्रह की कहानी 'जलता सूरज' में विलियम एक ख्रिश्चीयन युवक कहानी की आदिम नायिका बंजारी के साथ कई झूठी बातें बनाकर उसके साथ अवैध यौन-संबंध स्थापित करता है। वह पहले बंजारी को छेडता था फिर उसके घर जाकर उसके पिता से यहा-वहाँ की बातें करता रहता और जाते समय बंजारी को एक लाल साड़ी और पोलका खरीद कर देता है। बंजारी यह एहसान स्वीकारना नहीं चाहती थी परंतु विलियम ने करवट बदलकर उसके पिता से कहा -"पटेल क्या बहिन को भी भेंट देना मना है।"[10] तब मजबूरी से उसकी भेंट बंजारी को स्वीकार करनी पड़ी।

विलियम असाधारण चतुर आदमी था। वह इस तरह के कई खेल खेल चुका था। बंजारी साडी पहने के उससे मिलने आती है तो वह कहता है- "नाते रिश्ते तो

मानने के होते है बंजारी। जब जो मन में आया मान लिया।"[11] बंजारी प्रतिवाद करते हुए कहती है- "हम तो रिश्ते पर जीवन भर चलते हैं और एक जीवन नहीं जन्म-जन्म तक हमारे रिश्ते नहीं बदलते।" विलियम वहाँ भी अपनी हार मान कर कहता है "चल तेरी ही सही बात मानने की है न तु मुझे अपना भाई मानना मैं तुझे अपनी रानी मानूँगा।"[12] उस दिन करौंदे की उस छाँव में विलियम ने बंजारी को प्रेम के हजारों किस्से सुनाए।कई रस भरी बातें की और इन्हीं बातों की भूल-भूलैयों में उसने बंजारी को फसाया।यहाँ एक अनपढ़ भोली युवती के साथ विलियम अवैध यौन-संबंध स्थापित करता है इसका चित्रण अवस्थी जी ने किया है।

'ऊसर खेत' कहानी में अवस्थी जी नारी की दयनीयता का चित्रण किया है। कहानी नायिका 'मुंदरी' और उसका पति 'पिन्ना' का विवाह हो कर आठ बरस हो चुकने पर भी वे निसंतान है।इसी कारण पिन्ना मुंदरी को सौत लाने की धमकी देता है।दुनिया में उसी स्त्री का जीवन सार्थक है जो माँ है।इसके बाहर का जीवन एक छल है एक पाप है।मुंदरी के मन में माँ बनने की लालसा जाग उठी है।वह अपने प्रेमी उज्जी को मिलने बुलाकर अपने मातृत्व की भूख मिटाना चाहती है।मुंदरी अपने प्रेमी उज्जी से कहती है"बुरा न मान तो कहूँ मैंने तुझे केवल अपने मातृत्व की भूख मिटाने के लिए यहाँ बुलाया है।मैं अपने प्यारे पिन्ना के साथ छल नहीं कर सकती पर मैं पिन्ना को यह भी बता देना चाहती हूँ कि दोष उसमें है मैं पूरी औरत हूँ।मेरा स्त्रीत्व नष्ट नहीं हुआ है।"[13]

यहाँ स्पष्ट होता है कि अवैध यौन-संबंध आदिम समाज में दिखाई देते है जो स्वच्छंन्द रूप में स्थापन हुए है। इन औरतों की असाहयता, उनकी आर्थिक दुर्बलता संतान प्राप्ति की अभिलाषा, आर्थिक आकर्षण की झूठीं बातें बनाकर इन औरतों से अवैध यौन-संबंध रखे जा सकते है। ये औरतों पति से एकनिष्ठ होकर भी कभी-कभी मातृत्व की भूख मिटाने के लिए ऐसे संबंध स्थापित करती है।

3.1.4 लोकगीत :

लोकसाहित्य के अंतर्गत लोककथा, लोकनाट्य, लोकोक्तियाँ लोकगीत आते हैं। लोकभाषा के माध्यम से स्वर और लय के साथ संगीत के आवरण में लिपटी हुई सामान्य लोगों की रागात्मक अनुभूतियों को लोकगीत कहा जाता है। लोकगीत आदिमों के मन का चित्र रहा है। हर एक अंचल के निवासी अपनी अनुभूतियों को शब्दबद्ध करता है, वहीं लोकगीत है। आदिमों की अभिव्यक्ति लोकगीतों से प्रकट होती है। आदिम लोग विविध पर्व-त्यौहार, उत्सव एवं विविध संस्कारों के उपलक्ष्य में लोकगीत गाते हैं। डॉ. सम्पति अर्थानी का कथन है - "मानव जीवन का ऐसा कोई पक्ष नहीं जो लोकगीतों में व्यस्त नहीं हुआ। मानव के मातृगर्भ में स्थान पाने के साथ ही इन गीतों का आरंभ हो जाता है एवं अंत उसकी मृत्यु के पश्चात होता है।" [14]

लोकगीतों के संबंध में म.गांधीजी का कथन है - "इनमें धरती गाती है, पहाड़ गाते है, नदियाँ गाती है, फसले गाती है, उत्सव और मेले ऋतुएँ और परंपराएँ गाती है।"[15] लोकगीतों में अंचल का मानस प्रतिबिंबित होता है। उसमें हृदय की प्रधानता और भावों की उच्छृंखलता दिखाई देती है। आदिमों में युवा से लेकर आज तक की मानव विकास यात्रा की सरणियों का चित्रण लोकगीतों में रहा है।

राजेंद्र अवस्थी जी ने विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में आदिमोंद्वारा गाये जानेवाले लोकगीतों का यथार्थ चित्रण किया है। विवेच्य कहानी संग्रह की कहानी 'लमसेना' में कहानी की नायिका फुलिया गेहूँ की फसल काटते समय करमा के गीत गा रही है। जैसे -

"ओ हो! हाय रे हाय
मोला पयरी के साध,
लय दे होरा रूनझुन बाजैरे।"[16]

उसका प्रेमी चेतू भर्राई से आवाज में उत्तर देत हुए कहता है -

"पयरी के तोरा साध गोरी

हीरा मोर रूनझुन बाजै रे।"[17]

'महुआ आम के जंगल' विवेच्य कहानी में आदिमोंद्वारा मनाये जानेवाले 'लारूकाज' त्यौहार का चित्रण अवस्थी जी ने सशक्त रूप में चित्रित किया है। यह त्यौहार नारायण देव को प्रसन्न करने के लिए मनाया जाता है। इस खुशी में गाँववाले नाच-गान का आयोजन करते है। अंग्रेजी अफसर आने के बाद इस पर्व की शुरुवात होती है। ढोलियों के द्वारा ढोल पर थाप मारी जाती है-अंदर से सिहरती आवाज निकलती है, टिमकी, निसान और किकिर भी बज उठते है, बाँसुरी के स्वर ने हवा के लहराते झोंको को पकड़ते है औरत और मर्दो की टोली झूम उठती है। मुखिया बीच में कुदकर तान छेड़ता है, मर्द उसका साथ देते हुए कहते है - "ओ हो हाय रे हाय।" औरतें जवाबी स्वर छेड़ती हुई कहती है- 'ये हे हाय रे हाय ।"

"धन रे अगरिजवा

तोरी अक्कल भारी रे हाय रे हाय

अधरे चलाय रिलगारी हो हाय रे हाय"[18]

मर्द टेक पर बल देते हुए गा उठते है

"हो हो अधरे चलाय रिलगारी

हाय रे हाय रिलगारी

पतलून पहनये गोरा, उपर बढ़िया कोट,

पाँवन में बिलनैती जूता, सिर बिलनैती टोप।"[19]

आदिम लोकगीतों के रचियेता अज्ञात होते है। ये गीत छोटे-छोटे पंक्तियों में होते है। इन गीतों में पंक्तियों की पुनरावृत्तियाँ होती है। संगीत, लय, भावों का त्रिवेणी मिलाफ होता है। विविध वाद्य पर गीत गाये जाते है। लोकगीत विविध उत्सव, त्यौहार पर गाये जाते हैं। लोकगीतों के कारण आदिम संस्कृति सुरक्षित रही है।

इसलिए उन्हें सुरक्षित रखना होगा। लोकगीत आदिम जनजीवन की एक महत्वपूर्ण विरासत है, इसमें आनंद, भावनाओं का संमिश्रण दिखाई देता हैं।

3.1.5 पारिवारिक स्थिति :

परिवार यह एक मूलभूत एवं प्राथमिक स्वरूप का सामाजिक समूह है। व्यक्ति और समाज के विकास के लिए मौखिक कार्य करनेवाली परिवार संस्था से ही मनुष्य की प्रारंभिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। परिवार समाज का मूल आधार होने के कारण समाज की निरंतरता, विस्तार एवं संस्कृति की रक्षा होती है। संतती के प्रयोजन, परिवार का रक्षण, परिवार का सामाजिकीकरण, वैध यौन-संबंध आदि परिवार की विशेषताएँ है। परिवार के द्वारा यौन इच्छाओं की प्राप्ति सामाजिकता एवं धार्मिकता की शिक्षा और रक्षा आत्मीय संबंधो की सुरक्षा आदि लाभ होते हैं। रॉबर्ट लुई के मतानुसार-"परिवार यह विवाह पर आधारित सामाजिक समूह है। इस समूह में माता-पिता एवं उनके बच्चे समाहित होते है।"[20]

समाज से जुड़े परिवार में नारी की स्थिति एक जैसी नहीं होती। परिवार की आर्थिक स्थिति पर भी परिवार का मानसिक स्वास्थ्य टिका रहता है। कई समाज में स्त्रीयों को गौण समझकर हीन समझा जाता है। और उन्हें निचले दर्जे से परिवार में देखा जाता है। आदिम एवं पहाड़ी अंचल में रहनेवाला समाज अशिक्षित होने पर भी वहाँ नारी की स्थिति हीन नहीं है। मातृसत्ताक परिवार के कारण नारी को महत्वपूर्ण सम्मान दिया गया है। विवाह में लड़केवाले लड़की को दहेज देते है तथा लड़की की राय को महत्त्व दिया जाता है। आशारानी व्होरा का कथन है - "भारत के विभिन्न आदिम समुदायों में स्त्रीयों की सामाजिक स्थिति में पर्याप्त भिन्नता के बावजूद उनका सामाजिक स्तर शिक्षित और उन्नत समाज से कही ऊँचा है।"[21]

विवेच्य कहानी संग्रह की कहानी 'बे बात की बात' में अवस्थी जी ने आदिमों की पारिवारिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। आदिमों का परिवार परंपरागत पारिवारिक जीवन जीता है इसका चित्रण अवस्थी जी ने किया है। परंपरागत आदिम

पारिवारिक जीवन में स्त्री पूर्णत: पुरुष की आश्रित समझी जाती है। परिवार का यथार्थ चित्रण करते हुए अवस्थी जी कहते है-"उस टूटी सी झोपड़ी की रानी, अधनंगी और काली छाया। उसके पीछे चार बच्चे थे, बिलकुल नंगे।"[22]

राजेंद्र अवस्थी एक ऐसे लेखक हैं जो एक सैलानी के रूप में नहीं, बल्कि एक अध्येता के रूप में आदिम परिवारों में जाता है। उनके साथ महुआ का स्वाद लेता है, वहाँ उनकी सूखी रोटियाँ खोजने के लिए घुमता है। कुछ पाने के लिए छटपटाता है और कुछ लिखने के लिए दूर-दूर तक दृष्टि दौड़ता है। माड़ियाओं के बीच जहाँ एक ओर वह रात भर जागकर नृत्य और संगीत का आनंद लेता है वहाँ दूसरी ओर उनकी आर्थिक भिन्नता का भी उसे एहसास होता है।

यहाँ स्पष्ट होता है आदिमों में परिवार समाज का मूल आधार होता है। परिवार के माध्यम से निर्णायक एवं महत्वपूर्ण निर्णय लिये जाते है। आदिमों में वंश, सत्ता, विवाह निवास के आधार पर परिवार के कई प्रकार दिखाई देते है। जैसे - बहुपति परिवार, बहुपत्नी परिवार, पितृसत्ताक परिवार, मातृसत्ताक परिवार संयुक्त परिवार आदि।

3.1.6 घोटुल :

घोटुल गाँव के बाहर गाँव की सीमा पर स्थित होता है। घोटुल में एक-दुसरे के प्रेमी के साथ स्वयं ही व्यवहार करते है। हर एक की प्रेमिका होती हैं। रातभर किस्सा, कहानी नृत्य-गान होता है। डॉ.शशि का कथन है - "घोटुल में दी जानेवाली यौन शिक्षा का अर्थ बाहरी लोगों ने गलत लिया है। गैर पहाड़ियों के कारण वहाँ अनैतिक घटनाएँ घट रही है इसके लिए बाहर के लोग जिम्मेदार है।"[23]

घोटुल आदिम संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता है जिसे युवागृह या संस्कार केंद्र भी कहा जाता है। गाँव का संरक्षक अनुशासन और संस्कृति का केंद्र के रूप में घोटुल का महत्त्व रहा है। डॉ.यादवराव धुमाळजी के मतानुसार -"घोटुल और पंचायतें आदिम जनजीवन के मुख्य आधार हैं। घोटुल तो उनका सांस्कृतिक केंद्र है। उनकी

समाज जीवन की व्यवस्था और रीति-रिवाजों के चित्र घोटुल में मिलते हैं।"[24]

अवस्थी जी ने विवेच्य कहानी संग्रह की विभाजन तथा अन्य कहानियों में आदिमें प्रचलित घोटुल संबंधी मान्यताओं के सजीव वर्णन किये है।'विभाजन' कहानी की नायिका मोटियारी जब पाँच साल की थी तब उसके पिता ने उसे घोटुल भेज दिया था। घोटुल के मुखिया ने घोटुल के सारे नियम ऊसे समझाये थे। अब वह हर दिन घोटुल में आती-जाती रहती है। घोटुल के वर्णन को शब्दों में प्रकट करते हुए अवस्थी जी कहते हैं-"बेलोसा और दुलोसा ने सबको अगले दिन का काम बाँटा। चालकी ने सबको तम्बाकू दी। जमादार ने कंधियाँ बाँती। मुँशी ने सबकी हाजिरी ली और मुखावन ने सबकी खैर- खुशी पूछी। मुंशी ने फिर तुरही बजाई। सॉवरिया ने सुझाव रखा कि आज नाच के बदले किस्सा कहानी हो तो कैसा रहेगा।"[25] बेलोसा और दुलोसा घोटुल की रानियाँ होती हैं, होती है जो सदस्यों को काम बाँटती है। जमादार सदस्यों को कंघी बाँटता है। मुंशी घोटुल का इंचार्ज होता है। इस प्रकार घोटुल के प्रत्येक सदस्य को काम बाँटा जाता हैं।

'तीर का तीनका' कहानी में अवस्थी जी ने आदिमों के घोटुल का यथार्थ चित्रण किया है-"घोटुल का फाटक खुला। आग की रोशनी में चेलिक और मोटियारियों के चेहरे खिल ऊठे। एक दूसरे ने जुहार की। भीतर जाकर सबने अपनी-अपनी गीकी (चटाई) बिछा दी-

"सिरपुल हेलो डोरी निंदबेके दाकाट रोया।
सांगो निंदबेके काकाट रोय!"[26]

अवस्थी जी विवेच्य कहानियों में आदिमों प्रचलित घोटुल के चित्रण यथार्थ रूप में किये है। भारत में छोटा नागपुर में- मुंडा, हो, उरांव, खरिया, मध्यप्रदेश में-गोंड़, बेंगा,मड़िया,भुईया,आसाम में-नागा,मैमी,अंगामी,सेमा,छांत्र,कोन्याक कुकीज आदि जातियों में दक्षिण भारत में-मुथुवन मन्नन, पलियन कन्निकर आदि जातियों में घोटुल की प्रथा प्रचलित है। घोटुल को कुमारगृह, युवागृह आदि नामों से भी संबोधित किया जाता है।

यहाँ स्पष्ट होता है कि आदिम जनजीवन में घोटुल एक शिक्षा का केंद्र माना जाता है। यह वह संगठन है जिसमें चरित्र के अनुशासन, सहिष्णुता, उदारता तथा अन्य उदात्त गुणों का बीजारोपण किया जाता है। तथा यह एक ऐसा स्कूल है जहाँ भविष्य के वैवाहिक व यौन जीवन की शिक्षा मिल जाती है।

3.1.7 स्वच्छन्दी वृत्ति :

आदिमों का जीवन स्वच्छन्दी होता है। विवेच्य कहानी संग्रह में अवस्थी जी ने आदिमों की इस वृत्ति पर प्रकाश डाला है। आदिमों का जनजीवन आम आदमियों से भिन्न होता है। वे किसी से नहीं डरते और वे स्वाभिमानी जीवन जीते है।अवस्थी जी ने 'सिरदार' कहानी में आदिमों की स्वच्छन्दी वृत्ति को उजागर किया है। कहानी में एक आदिम अपनी स्वच्छन्दी वृत्ति,रहन-सहन,खान-पान, स्वाभिमान तथा निर्भयता के बारे में कहता है-"जंगल हमारा जीवन है बाबू। हम किसी से कुछ माँगने नहीं जाते। महुआ, आम, चार और तेंदू को झाड़ हमारे लिए काफी हैं। थोड़ी बहुत मिली कनकिर, जीजी, लाँदा और चपुडा (लाल चीटों का आचार),ढोंयका (बड़े मेढ़क),पन्ने (छोटे मेंढक) और घमघा साँप हमारे स्वाद को बदल देते हैं।कपड़े हमें नहीं चाहिए।जंगल के पेड़ हमारे कपड़े थे पर न जाने कब किसने आकर हमें यह लंगोटी दे दी और उसी दिन से गैल से नीचे गिरा दिया अब जितने गिर गये है,उससे नीचे तो न जाएँ।हमें कपड़े नहीं चाहिए, पैसे नहीं चाहिए-हमें अपनी इज्जत चाहिए बाबू जो एक जानवर भी चाहता है।"[27]

आदिम लोगों को शिकार का बड़ा शौक होता है।ये लोग सब मिलकर या अकेले ही शिकार खेलने निकलते है।शिकार करके वे जानवर का मांस ही नहीं खाते बल्कि मारे गये जानवर का तत्काल खून तक चूसते हैं।ये शेर,सुअर,भैंसा तथा सांभर का शिकार करते हैं।विवेच्य कहानी संग्रह की 'हिरौंदा' कहानी में इसका चित्रण दिखाई देता है।जैसे-"तरकस से तीर निकालकर उसने ऐसा निशाना साधा कि पानी पिता साँबर वहीं मछली की तरह तड़फने लगा।जरपू ने कमर भर पानी से नदिया पार की। फरसे से जब साँबर ढेर हो गया तो उसने गले के पास मुँह लगाकर खून पीना शुरू कर दिया।"[28]

आदिम लोग शिकार करने में बड़े ही माहिर होते हैं। इसका चित्रण अवस्थी जी ने विवेच्य संग्रह की 'एक प्यास पहेली' कहानी में किया है। कहानी का नायक पिन्ना एक कुशल शिकारी हैं। अंग्रेज अफसर उसे साथ लेकर शिकार पर जाते है। पिन्ना गाँव भर में सबसे अच्छा शिकारी माना जाता है। अंग्रेजी अफसर हमेशा उसे अपने साथ रखना चाहते है। इसका जिक्र करती हुई उसकी पत्नी चदिया कहती है- "एक तो वे अफसर है। जंगल के मालिक। दूसरे उसे भी तो शिकार में मजा आता है। जब वह किसी शेर या सुअर को चित्त कर देता है , तो अपने हाथों में लगे खून को बड़े स्वाद के साथ अपनी जीभ से चाटता है और गर्व भरी आँखों से अफसरों की ओर देखता है।बड़े से बड़े अफसरों ने उसकी पीठ ठोंकी है और उसे मुँह माँगा इनाम दिया हैं।" [29]

विवेच्य कहानियों के आधार पर यहाँ स्पष्ट होता है कि आदिमों में स्वच्छन्दी वृत्ति दिखाई देती है। आदिम कल की चिंता न करके जंगल के बीच, प्रकृति के साथ अपना स्वच्छन्दी जीवन व्यतित करते है।

3.1.8 विवाह संस्कार:

मानव के सामाजिक जीवन का अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट होता है कि समाज व्यक्ति को पूर्ण स्वातंत्र्य नहीं देता। व्यक्ति के अपने व्यवहार को अविपरित बर्ताव समाज में रहते हुए मान्यता नहीं दी जाती। व्यक्ति के समाज में रहते समय एक विशिष्ट बर्ताव करना चाहिए। यह ध्यान में रखते हुए समाज ने कई बंधन व्यक्ति के जीवन पर लादें हैं। उसी के अनुरूप व्यक्ति का अपना जीवन व्यतित होता है। व्यक्ति को जीवन में विवाह संस्था के द्वारा उसे उचित शिक्षा देकर समाज के नियमों के साथ चलने का मौका मिलता है। गिलीन के मतानुसार- "स्त्री और पुरुष के बीच वैषयिक संबंध प्रस्थापित करने का समाजमान्य मार्ग विवाह है।" [30]

आदिमों में प्राय: अपहरण विवाह, परीक्षा विवाह, सहपलायन आदि प्रकार विवाह किये जाते हैं। विवेच्य कहानी संग्रह में अवस्थी जी ने बस्तर, मंडला क्षेत्र के

आदिमों में प्रचलित विवाह किये जाते हैं इसका परिचय मिलता हैं। किसी भी समाज में अंतर्जातीय विवाह को सहजता से मान्यता नहीं दी जाती बल्कि उसका विरोध किया जाता है, चाहे वह आदिम समाज हो या सुसंस्कृत समाज। आदिम समाज में अंतर्जातीय विवाह को मान्यता नहीं दी जाती इसी अंतर्व्यथा को अवस्थी जी ने 'जड़बंधन' कहानी में दर्शाया है। कहानी का नायक पदमसिंह और फुलिया एक दुसरे से प्रेम करते है, लेकिन पदमसिंह की जाँति-पाँति का पता न होने के कारण गाँववाले उनके विवाह को मान्यता नहीं देते। पंचायत अपना फैसला सुनाती है। 'फुलवा' और 'पदम' की हरकतें नाजायज है। जिसके माँ-बाप और जाँति-पाँति का पता न हो उसके साथ फुलवा का ब्याह करना गाँव की बेइज्जती है। इसे किसी हालत में सहन नही किया जा सकता। यदि पंच फैसले के विरूद्ध फुलवा और पदम जाते है, तो उन्हें गाँव छोड़ना पड़ेगा।"[31] उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि आदिम समाज में अंतर्जातीय विवाह को सहजता से मान्यता नहीं दी जाती बल्कि इसका विरोध किया जाता है। यहाँ आदिमों द्वारा सजातीय विवाह की मान्यता को अवस्थी जी ने चित्रित किया है।

अवस्थी जी ने 'हिरोंदा' कहानी में स्त्री के अस्थिर जीवन की संवेदना को स्पष्ट किया है। कहानी की नायिका हिरोंदा किस प्रकार एक के बाद अनेक विवाह करती है इसका चित्रण विवेच्य कहानी में अवस्थी जी ने किया है। पहले वह जरपू के साथ विवाह करती है, दूसरा विवाह सन्तू, तीसरा विवाह नन्हें और आखिरकार स्पत के साथ जिन्दगी बीताती है। इसका चित्रण विवेच्य कहानी में किया है। स्त्री का जीवन गाय की तरह होता है उसे जिस खूँटी से बाँध दिया वह बंध गई। इस कहानी में अवस्थी बहुपतित्व विवाह की आदिमों की मान्यता को अवस्थी जी ने स्पष्ट किया है।

'लमसेना' कहानी में अवस्थी जी ने आदिमों में प्रचलित लमसेना रहकर विवाह की मान्यता को दर्शाया है। कहानी की नायिका फुलिया के घर मंगरू लमसेना है। इस प्रथा के अनुसार यदि कोई लड़का किसी लड़की के घर रहकर चार - पाँच बरस काम करें तो उस लड़की के पिता का कर्तव्य है कि अपनी लड़की की शादी अपने घर

लमसेना रहनेवाले लड़के से करें। यदि वह पिता ऐसा नहीं करता तो गाँववाले पंचायत बुलवाकर उसे शासन करते है। अवस्थी जी आदिमों की विवाह विषयक मान्यताओं प्रस्तुत कहानी में चित्रित किया है। फुलिया विवाह के पहले दिन खूब शृंगार करके घोटुल जाती हैं और वहाँ के युवतियाँ युवकों को तंबाकू बाँटती है। विवाह के उपरान्त घोटुल में नाच-गाना होता है। दुल्हा-दुल्हन की गीत गाकर खुशी के साथ बिदाई की जाती है।

यहाँ स्पष्ट होता है कि आदिमों में अंतर्जातीय विवाह को स्वीकृती नहीं दी जाती उसका विरोध किया जाता है। इसका चित्रण अवस्थी जी ने 'जड़ बंधन' कहानी में किया है। आदिमों में बहुपतित्व या बहुपत्नित्व विवाह भी होते है इसका चित्रण यहाँ हुआ है। आदिमों में 'लमसेना' रहकर भी विवाह किये जाते है इसका यथार्थ चित्रण अवस्थी जी ने किया है।

3.1.9 शिक्षा संबंधी मान्यताएँ :

आदिम समाज में शिक्षा संबंधी मान्यताएँ कम रही है। ज्यादातर आदिम लोग शिक्षा के प्रति विशेष जागृत दिखाई नहीं देते है। व्यक्ति विकास तथा समाज विकास के लिये शिक्षा एक अभिन्न अंग है। शिक्षा समाज की तथा व्यक्ति की योग्यताओं, मनोवृत्तियों, आदतों और संस्कारों को समृद्ध बनाती हैं। आज के आधुनिक एवं नवनिर्माण युग की स्थिति में शिक्षा का महत्त्व अनन्य साधारण रहा है। स्वातंत्र्यपूर्व काल में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार सीमित था। उस कालखंड में शिक्षा का उद्देश्य अजीविका पूर्ति तक ही सीमित था। इस समय आदिम समाज में शिक्षा प्रचार कम होने के कारण अज्ञान और अंधविश्वास की अधिकता रही है और आदिमों का शोषण विभिन्न आयामों में दिखाई देता है।

"अज्ञान, शोषण, गरिबी और पिछड़ेपन का सबसे प्रमुख कारण है आदिवासियों का अशिक्षित होना। जो प्रशिक्षित है, उन्नति के विभिन्न अवसरों का लाभ भी नहीं उठा पाते। यह स्थिति आदिवासियों के संदर्भ में विशेष रूप से देखी जा सकती है। वे पिछड़े शोषित और गरीब इसी कारण है कि अंधकार में भटकते हुए सामान्य

समाज से अलग-थलग पड़ गए। इसका एक दुष्परिणाम यह हुआ कि स्वतंत्रता के पश्चात विकास के जो अवसर समाज को मिले उसका पूरा लाभ आदिवासी नहीं उठा पाए। हालाँकि यह लाभ उन तक पहुँचाने के मामलें में शासन ने अपनी तरफ से कोई बाकी नहीं छोड़ी।"[32]

विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में कोई भी आदिम पात्र शिक्षा में रुचि नहीं रखता, वह अपना जीवन स्वच्छन्द और पूर्ण रूप से मुक्त जीना चाहता है। उनको यह शिक्षा उनकी संस्था घोटुल में ही मिलती है। उन्हें जीवन संबंधी अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु आदिम समाज में घोटुल केंद्र का प्रचलन हुआ है। स्वातंत्र्योत्तर काल में भारत सरकारद्वारा अंधविश्वासी, अज्ञानी आदिम जनों को शिक्षित करके उन्हें सुसंस्कृत और सुसंस्कारित करके देश की प्रगति में उनका योगदान प्रस्तुत करने हेतु भारतीय संविधान में उनके लिए विभिन्न कानून पारित करके परियोजनाएँ बनाई है। राजेंद्र अवस्थी जी के विवेच्य कहानी संग्रह में आदिम लोग शिक्षा में रूचि रखते दिखाई नहीं देते। विशेष रूप से पढ़ाई लिखाई पर ध्यान नहीं देते। पढ़ाई लिखाई करके नौकरी पाने की अपेक्षा वे खुली प्रकृति के प्रांगण में खेती करना, शिकार करके स्वच्छन्दी जीवन व्यतित करना अधिक पसन्द करते है। सरकार की नीति के अनुसार अनेक शिक्षा केंद्र आदिम समाज में आज धीरें-धीरे बल पकड़ते जा रहे हैं। परंतु आज भी शिक्षा का महत्त्व इनकी समझ में न आने के कारण अंधविश्वास, पुरानी मान्यताओं से जकड़े नजर आते है। आदिम समाज को सुसंस्कृत बनानेवाली जीवनयापन की सही दिशा दिखानेवाली व्यवस्था शिक्षा ही है। अत: स्पष्ट है कि अवस्थी जी ने आदिमों में प्रचलित अज्ञान, अंधविश्वास को दूर करने के लिए उनमें शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार करनें की ओर संकेत किया है। समाज के किसी भी वर्ग से भेद न करते हुए सभी को शिक्षा देना अनिवार्य है। यह मौलिक विचार अवस्थी जी ने विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों के द्वारा व्यक्त किये है। जो आदिमों की शिक्षा संबंधी मान्यताओं को स्पष्ट करते है।

3.2 आर्थिक स्थिति :

मानव आदि काल से अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए छटपटा रहा है। अपनी मूलभूत आवश्यकताओं पूर्ती के लिए उसकी यह छटपटाहट रही हैं। रोटी, कपड़ा और मकान यह व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताएँ है। किसी भी समाज की संपन्नता उसकी आर्थिकता पर निर्भर है। भारतीय जनता की आर्थिकता का प्रमुख स्त्रोत खेती है, जिसका आधार भूमि है। आदिम जनता अज्ञानी, अंधविश्वासी एवं असंस्कृत है, इसका सबसे बड़ा कारण धन का अभाव, गरीबी रहा है। धन के बल पर व्यक्ति सम्मानित एवं विकसित बनता है। सदियों से अस्पर्शित और प्रगति से दूर जंगलों एवं पहाड़ियों में बसी आदिम जनजातियों की आर्थिक स्थिति अत्यंत दुर्बल रही है।

आदिम लोगों में व्यवसाय और आर्थिक स्थिति का गहरा संबंध रहा है। समाज व्यवस्था में अर्थव्यवस्था का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। आदिम लोग अपनी जीविका वनों, जंगलो में प्राप्त वस्तुओं पर चलाते है। शिक्षा, यातायात के साधन, औद्योगिकरण का अभाव होने के कारण परंपरागत चले आये व्यवसाय जो जंगलों पर निर्भर है उन्हीं के दर्शन आदिमों में होते है। रूथ बुल्शेल के मतानुसार – "मानव अपने भौतिक विकास के साथ अस्तित्व की रक्षा के लिए जो संधान बनाता है वहीं वित्तिय व्यवस्था है।" [33]

मदन व मुजुमदार के मतानुसार-"मानव के हर रोज के जीवन की जरुरतों की पूर्ती कम से कम श्रम में हो इसलिए की गई व्यवस्था वित्तिय व्यवस्था है।" [34]

आज की समाज व्यवस्था अर्थ पर निर्भर है। अर्थ एक प्रतिभा का प्रमाण है। समाज पर वहीं अधिकार जमायेंगा जिसके पास सत्ता और सम्पति है। आदिम जनजातियाँ अविकसित होने के कारण अर्थाभाव से जीवनयापन करती है। उनकी आर्थिक स्थिति पर भी विवेच्य कहानी संग्रह में अवस्थी जी ने प्रकाश डाला है। आदिमों की आर्थिक स्थिति पर यहाँ हम विचार करेंगे। राजेंद्र अवस्थी जी ने आदिमों में प्रचलित भगेला रखने की प्रवृत्ति को चित्रित किया है जो आदिमों की आर्थिक दशा का चित्रण करती है। अवस्थी जी ने इसका चित्रण विवेच्य कहानी संग्रह की 'ऊसर खेत' कहानी में

किया है। इसका चित्रण करते हुए अवस्थी जी ने लिखा है - "पिन्ना भेजी के बाप ने चार पाँच कोरी रुपये उधार लिये थे। वह रुपये न पटा सका और इसलिए पंचायत के निर्णय पर पचास बरस की उमर में बीरा के यहाँ भगेला बनकर रहने लगा था। दो साल बाद वह मर गया था तो उसके लड़के को भगेला बनन पड़ा वह जिन्दगी भर काम करेगा पर अपने बाप का कर्जा कभी नहीं उतार सकेगा।" [35]

आदिम जनजातियों में जो आदमी कर्ज के बदले साहूकार के घर रहकर श्रम करता है उसे भगेला कहा जाता है। यह प्रथा माड़िया, गोडों में विशेष प्रचलित है। यहाँ स्पष्ट होता है आदिमों की आर्थिक स्थिति दुर्बल एवं साहूकारों एवं जमींदारों के शोषण से हीन दिखाई देती है। आदिमों की अर्थव्यवस्था सीधी-साधी होने के साथ-साथ सभी जगह एक जैसी दिखाई नहीं देती। हर एक आदिम समाज एवं आदिम जाति में अलग-अलग प्रकार की आर्थिक व्यवस्था होती है। इसपर भी अवस्थी जी विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों के द्वारा प्रकाश डाला है। 'तीर का तीनका' कहानी में अवस्थी जी ने गोंडों में प्रचलित 'भाँडी' में जीने की प्रथा का चित्रण किया है। जो आदिमों की आर्थिक स्थिति का चित्रण करती है।

विवेच्य कहानी में सुगरिन कहानी की नायिका है। सुगरिन न चाहते हुए भी शिकालगीर से शादी करना चाहती है क्यों कि उसके पिता ने शिकालगीर के पिता से कर्जा लिया था जो वापस लौटा न सके। इसका जिक्र करते हुए सगरिन के पिता कहते है - "हाँ सुगरी रो रहा हूँ, तेरे लिए, तू पोगरी जो हैं, और हर आदमी उससे प्यार करता है। शिकालगीर को देखती है, तो तू नाक भौंह सिकोड़ती है, पैर फटकारती है। यह जानती है कि उसके तापे का करजा है मुझ पर। भाँड़ी में जीता था, उसने छुड़ाया।"[36] गोंडों में प्रथा है जब कोई आदमी अपने आदिवासी साहूकार का कर्जा नहीं चुका सकता तो उसके यहाँ कर्ज के बदले नौकरी करने लगता है इसे भाँड़ी में जीना कहते है।

'कमर में बन्द एक गाँठ' कहानी में अवस्थी जी ने आदिमों के बाजार का चित्रण किया है जो उनके अप्रगत व्यवसाय एवं आदिमों की आर्थिकता जंगल, वनों से

प्राप्त वस्तुओं पर है इसका चित्रण करती है। "छोटा सा गाँव, कुछ दूर तक फूस की टपरियाँ, गेंवड़े के बाहर एक छोटा सा मैदान। उसमें दो बड़े झाड़ है, एक पीपल कौर एक बड़ का यही दो झाड़ दो छातों की तरह मैदान को ढँके रहते हैं और इन्हीं के नीचे बाजार लगता है, सुना मैदान जाग उठता है। छोटी-छोटी दुकानें लग जाती हैं। कुछ पर कपड़े केपाल तने रहने हैं और कुछ नंगे सिर ही रहती हैं। दूर-दूर के व्यापारी यहाँ आते हैं, घोड़ों पर, गाड़ियों पर और पैदल भी। सब तरह के सामान यहाँ आते हैं। तरकारी - भाजी से लेकर सिन्नी -मिठाई और बरतन भाँड़े तक।"[37]

आदिम लोग अप्रगत व्यवसायों के शिकंजे में जकड़े रहने के कारण उनकी आर्थिकता दुर्बल रही है। कर्ज लेना, वस्तुओं को गिरवी रखना जैसी अनिष्ट प्रथाओं का निर्वाह उन्हें करना पड़ता है। आज सरकार जंगल संपत्ति के विविध आयामों के माध्यम से इन लोगों को काम उपलब्ध करा देने का काम कर रही है।उनसे निर्मित वस्तुओं को सरकार खुद खरीद रही है। नये- नये व्यवसायों के प्रति आकर्षित कर रही है। सुविधाएँ उपलब्ध करा रही है। आदि के प्रति फलस्वरूप अविकसित आदिम जन विकास की ओर बढ़ रहे है। आज आधुनिक विकास के लिए नौकरी में आरक्षण, कर्ज की सहायता देना, बाजार की सुविधा प्राप्त करा देना आदि योजनाएँ आदिमों की स्थिति में सुधार लाने पर प्रकाश ड़ालती है।अत: स्पष्ट है कि आज धीरे-धीरे आदिम लोग विकास की धारा में प्रवाहित हो रहे हैं।

समन्वित निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्याय में आदिमों की सामाजिक स्थिति के अंतर्गत उनमें स्थित अंधविश्वास, अवैध यौन-संबंध, आदिम नारी की स्थिति, उनके लोकगीत, उनकी पारिवारिक स्थिति, घोटुल, उनकी स्वच्छन्दी वृत्ति, विवाह संबंधी मान्यताएँ, शिक्षा संबंधी मान्यताएँ आदि पर संक्षिप्त रूप में विचार किया गया है। उनकी सामाजिक मान्यता, उनका अंधविश्वास उनके देवी-देवता उनकी शैक्षिक स्थिति आदि के पीछे का मूल कारण

उनका अज्ञान ही रहा है। आदिम जनों की मूल समस्या सामाजिक और आर्थिक रही है। आदिम लोग आर्थिक दशा में हीन होने पर भी भावनात्मकता, सामूहिक एकात्मता के क्षेत्र में श्रेष्ठ लगते है।

घोटुल आदिम समाज का शिक्षा केंद्र रहा है। जीवन की शिक्षा, संस्कृति की शिक्षा देनेवाला यह केंद्र है। यौन-शिक्षा के साथ-साथ आपसी रिश्ते बढ़ाने संभालने और उन्हें बढावा देनेवाला यह केंद्र है। विविध उत्सव-पर्व में लोकगीतों के द्वारा इनमें एकता को बढ़ावा मिलता है। ये उत्सव-त्यौहार, स्त्री-पुरुष, युवा वर्ग मिलकर संघटित होकर घोटुल में कैसे मनाते है उसके दर्शन यहाँ होते हैं। आदिम लोग अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए लोकगीतों का सहारा लेते हैं। आदिम नारी शोषित है मगर पति परायण सेविका लगती है इसका सबूत हमें 'ऊसर खेत' कहनी की नायिका मंदरी के द्वारा मिलता है। आदिमों में स्थित अवैध यौन-संबंध भी यहाँ दिखाई देते हैं। धन का लोभ दिखाकर आदिम नारी के साथ उच्च वर्ग के लोग अवैध यौन-संबंध प्रस्थापित करते हैं। इसका चित्रण अवस्थी जी ने किया है। आज भी आदिम लोग अप्रगत व्यवसाय के शिकंजे में जकड़े रहने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति दुर्बल रही है। आदि विविध आयामों में आदिम जनजीवन की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को तलाशने का प्रयास किया है।

आदिम समाज की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति की तलाश करते समय अवस्थी जी का मूल उद्देश्य परिवर्तनकारी प्रवृत्तियों का आदिम जनों के जीवन से जोड़ने का रहा है। अत: स्पष्ट है कि अवस्थी जी ने आदिम जनजीवन की विवेच्य कहानी संग्रह के माध्यम से सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालने में सफलता हासिल की है। शिकार करना, कंदमूल, फल, महुआ, लांदा आदि को बेचकर अपनी आर्थिकता को सहेजने का प्रयत्न ये लोग करते हैं इसे अवस्थी जी ने विवेच्य कहानियों में उजागर किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1)	डॉ. विरेन्द्र सिन्हा	-	शब्दार्थो के गवाक्ष, विवेक पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, प्र.सं.-1986, पृ.क्र.- 57
2)	राजेंद्र अवस्थी	-	महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1987, पृ.क्र.- 113
3)	राजेंद्र अवस्थी	-	वही, पृ.क्र.- 57
4)	श्यामसिंह शशि		भारत की आदिवासी महिलाएँ, समकालीन प्रकाशन, दिल्ली, (लेखकीय से उद्‌भुत)
5)	राजेंद्र अवस्थी	-	महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1987, पृ.क्र.- 38
6)	राजेंद्र अवस्थी	-	वही, पृ.क्र.- 38
7)	राजेंद्र अवस्थी	-	वही, पृ.क्र.- 167
8)	स्वर्णलता	-	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, विवेक पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, प्र.सं.-1975, पृ.क्र.- 128
9)	चमनलाल गुप्ता	-	यशपाल के उपन्यास सामाजिक लक्ष्य, शारदा प्रकाशन, प्र.सं.-1978, पृ.क्र.- 54
10)	राजेंद्र अवस्थी	-	महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली प्र.सं.-1987, पृ.क्र.- 123
11)	राजेंद्र अवस्थी	-	वही, पृ.क्र.- 124
12)	राजेंद्र अवस्थी	-	वही, पृ.क्र.- 124
13)	राजेंद्र अवस्थी	-	वही, पृ.क्र.- 38-39
14)	डॉ सम्पति अर्थानी	-	मगधी भाषा और साहित्य, राष्ट्रभाषा परिषद, बिहार। प्र.सं.-1976, पृ.क्र.- 141

15) विरेन्द्रनाथ द्विवेदी - आधुनिक हिन्दी कविता में लोकतत्व, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.-1991, पृ.क्र.- 31

16) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1987, पृ.क्र.- 14

17) राजेंद्र अवस्थी - वही, पृ.क्र.- 15

18) राजेंद्र अवस्थी - वही, पृ.क्र.- 115

19) राजेंद्र अवस्थी - वही, पृ.क्र.- 115

20) गुरूनाथ नाडगोंडे - भारतीय आदिवासी, कॉन्टिनेंटल प्रकाशन,पुणे, पृ.क्र.- 137

21) आशाराणी व्होरा - भारतीय नारी दशा और दिशा, नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्र.सं.-1983, पृ.क्र.- 97

22) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1987, पृ.क्र.- 92

23) श्यामसिंह शशि - हिमालय के खानाबदेश, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं.-1978, पृ.क्र.- 16

24) डॉ.यादवराव धुमाल - साठोत्तरी हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का प्रवृत्तिमुलक तुलनात्मक अध्ययन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपूर, प्र.स.- 1997, पृ.क्र.- 152

25) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1987, पृ.क्र.- 75

26) राजेंद्र अवस्थी - वही, पृ.क्र.- 158

27) राजेंद्र अवस्थी - वही, पृ.क्र.- 65

28) राजेंद्र अवस्थी - वही, पृ.क्र.- 49

29) राजेंद्र अवस्थी - वही, पृ.क्र.- 150

30) गुरूनाथ नाडगोंडे - भारतीय आदिवासी, कॉन्टिनेंटल प्रकाशन,पुणे, पृ.क्र.- 78

31) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1987, पृ.क्र.- 104 -105

32) पी. आर. नायडू - भारत के आदिवासी विकास की समस्याएँ, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ.क्र.- 106

33) ए. वाय. कोंडेकर - भारतीय आदिवासी समाज, फडके प्रकाशन, कोल्हापुर,पृ.क्र.- 131

34) ए. वाय. कोंडेकर - वही, पृ.क्र.- 131

35) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1987, पृ.क्र.- 33

36) राजेंद्र अवस्थी - वही, पृ.क्र.- 157

37) राजेंद्र अवस्थी - वही, पृ.क्र.- 136